हिन्दी भाषा के विकास में पत्रकारिता का योगदान

*डॉ. श्रीमती शोभना जैन

साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है और समाचार पत्र को जन्दी मैं लिखा गया अपने समय का इतिहास। मीडिया और साहित्य के आपसी संबंधों को समझने के लिए हमैं अपने पराये की सच्चाइयों को समझना होगा। जिस तरह साहित्य बेहतर दुनिया को रचने के लिए लिखा जाता है, उसी तरह मीडिया का लक्ष्य केवल सूचना देना, मनोरंजन करने तक सीमित नहीं है। दोनो के व्यापक "समाचार पत्र का एक उद्देश्य जनता की इच्छाओं, विचारों को समझना और उन्हे व्यक्त करना है, दूसरा उद्देश्य जनता मैं वांछनीय भावनाओं को जागृत करना और तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भयता पूर्वक प्रकट करना है।"– महात्मा गाँधी

पत्रकारिता जनसेवा का सशक्त माध्यम है। आज के वैज्ञानिक युग मैं इसकी महत्ता और भी बढ़ गयी है, यह हमारे जीवन की विविधताओं, नित्य घटित होने वाली नूतन घटनाओं को अति शीघ्रता के साथ दुनियाँ के कोने–कोने मैं पहुँचाती है।

मानव स्वभाव से जिज्ञासु होता है, वह अपने आस–पास घटने वाली घटनाओं को जानने के लिए सदा उत्सुक रहता है। वर्तमान समय मैं उसकी जानने की यह इच्छा मात्र अपने समाज, राज्य या देश तक ही सीमित न होकर विश्व की संपूर्ण गतिविधियों तक बढ़ गई है। पत्रकारिता के द्वारा उसकी इन इच्छाओं की पूर्ति सुगमता पूर्वक हो जाती है, उदाहरण के लिये सुबह आँख खुलते ही प्रत्येक व्यक्ति सबसे पहले यह जानना चाहता है कि उसके आस–पास, देश–समाज व दुनियाँ भर मैं कौन सी नई घटना घटी है और उसकी इस जिज्ञासा का संचार माध्यम शांत करते है।

पत्रकारिता हमैं हमारे समाज, देश की समस्याओं व विचारों से ही रुबरु नहीं कराती बल्कि संपूर्ण विश्व भर की घटनाओं को हमारे सामने प्रस्तुत करती है।

पत्रकारिता अंग्रेजी के जर्नलिज्म का अनुवाद है। जर्नलिज्म शब्द (जर्नल) से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ दैनिक होता है। प्रारंभ मैं सरकारी कार्यो के दैनंदिन विवरणों एवं बैठकों की कार्यवाहियों को जर्नल के अंतर्गत रखा जाता था। समयोपरान्त ये विषय सार्वजनिक होते गये और बीसवीं सदी तक आते–आते विद्वतापूर्वक लेखों एवं गंभीर राजनैतिक आलोचनाओं को इसके अंर्तगत समाहित कर लिया गया।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य मैं पत्रकारिता मनुष्य जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करती है। परस्पर निर्भयता और समन्वयकरण के कारण यह समाज का दर्पण बन गई है। उसकी लोकप्रियता एवं प्रभाव को देखते हुए ही इसे लोकतंत्र का चौथा खंभा अथवा स्तंभ मान लिया गया है।

मनुष्य के जीवन मैं अनेकों प्रकार की घटनाएँ घटती रहती है, जहाँ कुछ घटनाएँ व्यक्ति को आनंदित करती है, वंही कुछ घटनाएँ व्यथित कर देती हैं। मानव जीवन विविधताओं से भरा रहता है। नवीन साधनों ने मानव जीवन को बहु आयामी बना दिया है। व्यक्ति अपनी रुचि प्रवृत्ति एवं प्रतिभा के अनुसार अपने लिए विशिष्ट क्षैत्र का चयन करता है। यही बात पत्रकारिता के क्षैत्र मैं भी लागू होती है। क्योंकि वर्तमान युग विशिष्टीकरण का युग है, अब वह समय नहीं रहा जब पत्रकारिता का एक मात्र उद्देश्य देश को स्वाधीनता प्रदान करना ही था।

वर्तमान समाय मैं पत्रकारिता का क्षैत्र अत्यंत विशाल हो गया है, सन् 1780 मैं प्रकाशित भारत का प्रथम समाचार पत्र " हिक्की गजट" से शुरु होकर लगभग सवा दो सौ वर्ष की यात्रा मैं पत्रकारिता को अनेकों दुर्गम परिस्थितियों के मध्य से निकलना पडा। वर्तमान स्थिति यह है कि पत्रकारिता को सिर्फ समाचार पत्र, पत्रिका तक ही सीमित रखना इसके साथ अन्याय होगा।

जिस प्रकार साहित्य समाज का दर्पण होता है उसी प्रकार पत्र–पत्रिकाएं भी सीधे–सीधे समाज से जुडती हैं, मानव–जीवन की संपूर्ण झांकी को पत्रकारिता अपने ह्रदय मैं समैंटे रहती है। यह मनुष्य प्रस्तुत करता है। वर्तमान समय मैं यह मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग है।

वैज्ञानिक अविष्कारों ने दुनियाँ को विश्व गाँव के रुप मैं बदल दिया है। एक समय था, किसी खबर को एक शहर से दूसरे शहर तक पहुँचने मैं घंटो लग जाते थे लेकिन आज की स्थिति यह है कि दुनियाँ के एक छोर पर घटी घटना को दूसरे छोर तक पहुँचने मैं मात्र कुछ ही सेकेण्ड लगते हैं।

पत्रकारिता का इतिहास एवं विकास यात्रा :

भारतीय नवजागरण और उसके आदि उन्नायक राजा राममोहन रॉय आधुनिकता भारतीय नवजागरण की सबसे बड़ी उपलब्धि है। आधुनिकता अर्थात् एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण जो पूर्व और पश्चिम के बीच सांस्कृतिक सेतु बना। चूँकि नवजागरण का अनुभव सबसे पहले बंगाल ने किया था, इसलिए स्वाभाविक था कि आधुनिकता भारत मैं बंगाल की खाड़ी से ही प्रवेश करती।

आधुनिकता ने हमारे अन्दर एक ऐसी चेतना उत्पन्न की जिसमैं पश्चिमी जगत् को अधिकाधिक जानने–समझने के लिए हम उत्सुक हो गये, किन्तु आधुनिकता के मूल वैशिष्ट्य की समग्रता को पूरी तरह आत्मसात् करने के लिए अंग्रेजी भाषा का ज्ञान आवश्यक था। सुधारवादी आन्दोलन के आदि संचालक और भारतीय नवजागरण के उन्नायक राजा राममोहन रॉय ने इसे सही रुप मैं समझा और अंग्रेजी शिक्षा–प्रचार का पक्ष समर्थन कर अपनी प्रगतिशीलता का प्रमाण दिया।

अंग्रेजी शिक्षा ने सम्पूर्ण सांस्कृतिक परिवेश मैं परिवर्तन की अपेक्षा उत्पन्न की। उक्त परिवर्तन की अपेक्षा रखने वाले भारतीयों के दो वर्ग थे जिनकी दो स्वतंत्रत दृष्टियां थी। एक वह वर्ग था जो अंगरेजियत के रंग मैं इतना रंग गया था कि भारतीयता उसे फूहड़ और विजातीय लगने लगी थी इस आधुनिक राष्ट्र–राज्य की मध्ययुगीन मानसिकता पर कम्प्यूटर संस्कृति दस्तकें दे रही थी। इस पृष्ठभूमि मैं क्षैत्रीय हिंदी पत्रकारिता ने अपना एक स्वतंत्र व्याकरण रचा। महानगरीय हिंदी दैनिकों के माडलों से मुक्त क्षैत्रीय अखबारों का ठेठ देशज रुप उभर कर सामने आया। सदी के अंतिम दशक मैं यह रुप और अधिक निखरा है। इस संदर्भ मैं राजस्थान पत्रिका, देशबंधु,नई दुनिया, भास्कर, अमर उजाला, जागरण, नवज्योति, नवभारत, आज पंजाब केसरी, प्रभात खबर जैसे दैनिकों का उल्लेख प्रासंगिक रहेगा। इन क्षैत्रीय दैनिकों की व्यावसायिक गुणवत्ता मैं भारी अंतर है। इन्हे व्यावसायिकता की दृष्टि से कई श्रैणियों मैं बांटा जा सकता है। लेकिन यहां असल मुद्दा यह है कि क्षैत्रीय दैनिक अपनी एक स्वतंत्र सत्ता कायम करने मैं सफल रहे हैं, जबकि महानगरीय दैनिक इनके प्रभाव–दुर्ग को जीतने मैं असफल सिद्ध हो चुके है। जहां–जहां क्षैत्रीय दैनिक मजबूत स्थिति मैं हैं, वहां–वहां तथाकथित राष्ट्रीय दैनिक उनके

*सहायक प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय महाविद्यालय, सारनी, जिला बैतूल (म.प्र.)

दुर्ग में सुराख भी नहीं कर सके है। पटना, लखनऊ और जयपुर में नवभारत टाइम्स के साम्राज्य के सिमटने में महानगरीय हिंदी दैनिक की पराजय को देखा जा सकता है।

तर्क दिया जा सकता है कि घाटे की अर्थव्यवस्था की वजह से नवभारत टाइम्स के संस्करणों को बंद करना पडा। संभव है, यह तर्क एक सीमा तक सही हो पर यह एक मात्र वहज नहीं हो सकती। सच्चाई यह है कि क्षैत्रीय दैनिकों का जन्म और विकास उपांगीकरण के परिवेश में नहीं हुआ। इन दैनिकों ने अंग्रेजी पत्र–पत्रिकाओं को अपने आदर्श या प्रतिमान के रुप में नहीं चुना। अंग्रेजी संपादको ने इनका मार्ग दर्शन नहीं किया। इनकी अभिव्यक्ति शैली पर अंग्रेजी रुपकों का रोगन नहीं चढ़ा हुआ था। एक देशी खुदरापन इनकी काया से फूटता रहा है। यही वजह है कि राजस्थान पत्रिका, नई दुनिया, अमर उजाला, भास्कर, जागरण, देशबंधु, जैसे अखबार राष्ट्रीय स्तर पर अपनी–अपनी स्वतंत्र पहचान रखते हैं और क्षैत्रीय अस्मिताओं का प्रतिनिधित्व करते है।

भास्कर, नवभारत, राजस्थान पत्रिका, लोकमत जैसे क्षैत्रीय समाचार समूहों ने भी अपने सहयोगी अंग्रेजी प्रकाशनों को हिन्दी प्रकाशनों को हिंन्दी प्राकशनो पर हावी नहीं होने दिया है। उदाहरण के लिए बहु–संस्करणीय भास्कर के सहयोगी अंग्रेजी दैनिक नेशनल मैंल का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। मध यप्रदेश के ही नवभारत समूह से अंग्रेजी में दैनिक एम.पी. क्रॉनिकल लंबे अरसे से निकलता है। लेकिन यह दैनिक आज तक अपनी स्वतंत्र पहचान नहीं बना सका है। बहु–संस्करणीय दैनिक लोकमत का भी एक सहयोगी अंग्रेजी दैनिक है। मूल मराठी दैनिक से स्वतंत्र इसका कोई अस्तित्व नहीं है। क्या आज नवभारत टाइम्स, हिन्दुस्तान टाइम्स, जनसत्ता, हिंदी इंडिया टुडे, भाषा व यूनिवार्ता जैसी समाचार एजेंसियों और पत्र–पत्रिकाओं के संबंध में यही बात कही जा सकती है।

हिन्दी का पत्रकारिता से संबंध :

अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार से जिस प्रकार अंग्रेजी सरकार आशांकित थी वैसे ही मुद्रण–कला और पत्र–कला के विकास को वह एक प्रतिकूल शक्ति का अशुभ विकास समझती थी। इसलिए उसके विकास–मार्ग में नाना प्रकार के अवरोध उपस्थित करती रहती थी। किन्तु अधिक समय तक उसे दबा रखना सम्भव न था। स्वार्थ का भी आग्रह था जिसके चलते उसे कलकत्ता और मद्रास में प्रेस खोलना पड़ा। पहला प्रेस सीरामपुर(बंगाल) में बापटिस्ट मिशनरी–द्वारा खोला गया और पहला भारतीय पत्र एक अंग्रेज के सम्पादकत्व में 29 जनवरी 1780 ई. में प्रकाशित हुआ। जेम्स अगस्टन हिकी द्वारा सम्पादित इस पत्र का नाम था 'हिकीज बंगाल गजट' अथवा 'कलकत्ता जेनरल अडवरटाइजर'। 'इंडिया गेजेट' नाम का दूसरा पत्र नवम्बर 1780 में कलकत्ते से ही निकला। तीसरा पत्र 'कैलकटा गैजेट' फरवरी 1784 में निकला। चौथा पत्र था 'बंगाल जर्नल' जो फरवरी 1785 में निकला। इसी वर्ष ' ओरियण्टल मैंगजीन' और मासिक पत्र 'कैलकटा एम्यूजमैंन्ट' निकला। इस प्रकार 6 वर्षों के अन्दर कलकत्ते से ही 6 पत्र, एक मासिक और 5 साप्ताहिक–प्रकाशित हुए। सन् 1791 में विलियम हुफ़ानी नामक अमरिकी ने 'इण्डियन वर्ल्ड' प्रकाशित किया और 'बंगाल जर्नल का भी सम्पादन करते रहे। सन् 1795 में मद्रास से 'इण्डियन हेरल्ड' निकला जिसके सम्पादक हफेस थे। सन् 1818 ई.में कलकत्ते से जेम्स सिल्क बकिंघम के सम्पादकत्व में 'कलकत्ता जर्नल' प्रकाशित हुआ। यह अर्ध–साप्ताहिक पत्र था जिसकी तेजस्विता और निर्भीक अलोचना से त्तकालीन गवर्नर, जेनरल, गवर्नर, जज और लार्ड विशप भी बच न सके। इसी प्रकार मद्रास से 12 अक्टूबर 1785 को सरकारी मुद्रक रिचर्ड जान्सन ने एक पत्र निकाला था। यह एक प्रकार से सरकारी त्तवाधान में निकला था, इसलिए इसे सरकारी विज्ञापन सुलभ था। 'मैंड्रास कूरियर' नाम कायह पत्र साप्ताहिक था, और 4 पृष्ठों पर छपता था। जनवरी 17 95 में 'मैंड्रास गैजेट' प्रकाशित हुआ। ये पत्र सरकारी अनुमतिपत्र से निकलते थे, मगर 'इण्डिया हेरल्ड' बिना लाइसेंस लिये ही निकला। इसे 2 अप्रैल 1795 को हम्फ्रीज ने निकाला था। सरकार की इस पर कुदृष्टि थी। इस पर सरकारी आरोप था कि इसने शासन और प्रिंस ऑव वेल्स के विषय में अत्यन्त अपमानजनक लेख प्रकाशित किये है। हम्फ्रीज को वही सजा दी गयी जो अंग्रेजों को दी जाती थी यानी उसे जहाज पर चढाकर विलायत भेज दिया गया, मगर हम्फ्रीज मार्ग से ही गायब हो गया। बाम्बे से 1789 में 'बाम्बे हेरल्ड' निकला। दूसरे वर्ष 'बाम्बे कूरियर' प्रकाशित हुआ। 1791 में 'बाम्बे गैजेट' निकला। दूसरे वर्ष सन् 1793, में 'बाम्बे हेरल्ड' और 'बाम्बे गैजेट' मिलकर एक हो गये। इस प्रकार भारतीय पत्रकारिता की नींव अंग्रेजों ने डाली और उसके महत्वपूर्ण आरम्भिक अध्याय का निर्माण किया। यह संयोग की बात थी कि अंग्रेजी शिक्षा, पत्रकारिता और भारतीय राष्ट्रीय महासभा के त्रिकोण की रेखा अंग्रेजों ने ही खींचीं जिस पर भारतीय स्वतंत्रता की लडाई हुई और अन्त में यही त्रिकोण स्वतंत्रता प्राप्ति का निमित्त सिद्ध हुआ।

पत्रकारिता का योगदान :

उदारीकरण और उपभोक्तावाद के शुरुआती दिनों में दिल्ली के हिंदी पत्रकारों को एक झटका लगा था। बाद में इस झटके को समूचे हिंदी पत्रकार जगत ने महसूस किया था। इस झटके के दूरगामी खतरे भी दिखाई दे रहे थे। तब की आशंकाए आज सच सिद्ध हुई हैं। हुआ यह था कि देश के शक्तिशाली प्रेस प्रतिष्ठान टाइम्स ऑफ इंण्डिया के मालिको ने हिन्दी दैनिक नवभारत टाइम्स को अंग्रेजी काया पहनाने की कोशिश की। इसके लिए तरकीब यह सोची गई कि टाइम्स के संपादकीयों और व्यापार–आर्थिक पृष्ठों का हिन्दी अनुवाद नवभारत टाइम्स में नत्थी कर दिया जाए। विभिन्न खण्डो के शीर्षक भी यथावत रहें। नवभारत टाइम्स के जयपुर संस्करण में तो इकोनोमिक टाइम्स के दो पृष्ठों को आखिर तक जस के तस वितरित किए गए। टाइम्स के संपादकीयों का हिन्दी अनुवाद छापने की कोशिश हुई। स्वाभाविक था कि मालिको के इस – अप्रत्याशित कदम के खिलाफ आवाज उठे। नवभारत टाइम्स के पत्रकारों ने प्रतिवाद किया। टाइम्स प्रतिष्ठान के बाहर के पत्रकारों ने भी विरोध किया। भीतर के पत्रकारों का मुद्दा एक ही था कि नवभारत टाइम्स का अंग्रेजीकरण न किया जाए। दूसरे शब्दों में हिन्दी पत्रकारिता का अंग्रेजीकरण नहीं होना चाहिए। एक हिन्दी दैनिक की देह में अंग्रेजी आत्मा रोपने का यह कदम तात्कालिक रुप से सफल नहीं हो सका। हिन्दी पत्रकार समुदाय के भारी दबाव के बीच मालिकों ने अपनी योजना फौरी तौर पर मुल्तवी कर दी पर अंतः किया वही, जो वे चाहते थे। नवभारत टाइम्स में 'बिजनेस टाइम्स' का स्तंभ चस्पा कर दिया गया। इस प्रकार अंग्रेजी प्रतिष्ठानों में प्रकाशित हिन्दी दैनिकों के अंग्रेजी रुपांतरण की प्रक्रिया शुरु होती हैं। यह प्रक्रिया एक खास घराने तक भी सीमित नहीं रहेगी, दूसरे घरानों को भी लीलने की कोशिश करेगी।

उपांगीकरण :

दरअसल, अंग्रेजी रुपांतरण की प्रक्रिया कोई आकस्मिक घटना नहीं है, बल्कि लंबे समय से मौजूद हिन्दी दैनिक के उपांगीकरण की प्रवृत्ति की स्वाभाविक परिणति है। अंग्रेजी प्रतिष्ठानों से निकलने वाले हिंदी दैनिको की संप्रभुता को कभी भी मान्यता नहीं मिली। उन्हे अंग्रेजी पत्र–पत्रिकाओं के उपांग साफ शब्दों में–पुछल्ले के रुप में देखा गया। उन्हे अंग्रेजी का एक बाइ–प्राडक्ट भी कहा गया। हिन्दी दैनिक के संपादको और पत्रकारों को सदैव दोयम दर्जा देने की कोशिश की गई। स्वतंत्र भारत में प्रतिष्ठानी अखबार स्वामियों की यह मानसिकता कमजोर नहीं, बल्कि और मजबूत हुई है।

बतौर सबूत, हिन्दुस्तान टाइम्स, टाइम्स ऑफ इण्डिया

जैसे बडे प्रेस समूह के मालिकों ने इसकी कभी परवाह नहीं कि हिन्दुस्तान और नवभारत टाइम्स के विदेशों में स्वतंत्र संवाददाता होने चाहिए। आधी सदी गुजर जाने के बाद भी इन दोनो महानगरीय हिन्दी दैनिको के पास स्वयं का एक भी समुद्रपारीय संवाददाता नहीं है। इन्हे हिन्दुस्तान टाइम्स और टाइम्स ऑफ इण्डिया के विदेश स्थित प्रतिनिधियों की रपटों पर आश्रित रहना पडता है। जबकि दोनो अंग्रेजी दैनिक करीब एक दर्जन समुद्रपारीय संवाददाताओं से लैस है। लंदन और वशिंगटन में इनके अपने व्यूरो है।

देश के भीतर भी दोनो दैनिको की स्थिति बेहतर नहीं है। दैनिक हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स के लिए यह निश्चित ही लज्जाजनक स्थिति है कि दक्षिण के किसी भी राज्य में इनका आज भी कोई प्रतिनिधि नहीं है। इसके विपरीत चेन्नई, बैंगलौर, तिरुवंतपुरम है और हैदराबाद में हिन्दुस्तान टाइम्स और टाइम्स ऑफ इण्डिया के विधिवत् संवाददाता है। संक्षेप में, भारत के आधे से ज्यादा हिस्सों में महानगरीय हिन्दी दैनिको के संवाददाता नहीं है।

पत्रकारिता का हिन्दी क्षेत्र में वैशिष्ट्य एवं अपेक्षाएँ:

बीसवीं सदी के अन्त में लगभग एक साथ प्रकाशित ये किताबें बताती है कि हिन्दी की पत्रकारिता का गुणधर्म तेजी से बदल रहा है और हिन्दी पत्रकारिता के सामने आई चुनौतियों से हमारे कुछ पत्रकार न केवल वाकिफ हैं बल्कि अपने ढंग से उनके हल तलाश करते है।

यहाँ पत्रकारिता को एक सामाजिक प्रक्रिया के रुप में देखा गया है और उसकी भूमिका की विकासशील समाज की जरुरतो से जोडकार चला गया है। इसी प्रक्रिया में पत्रकारिता के लिए 'नए शिक्षा शास्त्र' की जरुरत बताते हुए रामशरण जोशी मिडिया के समाजशास्त्र को खोलते हैं। हिन्दी पत्रकारिता के तेजी से गिरते ' बाजार–भाव' के लिए जवाहर लाल कौल भूमंडलीकरण और अंगेजी के वर्चस्व को जिम्मैंदार ठहराते है। देश की राजधानी से बाहर छोटे शहरों से निकलने वाले अखबारों को मैंनस्ट्रीम मानकर यशवंत व्यास एक सुदीर्घ बहस पैदा करते हैं जो हिन्दी की कथित राष्ट्रीय पत्रकारिता के 'राष्ट्रीय' विशेषण का तेज हरण करती है। समाज सूचनायुक्त कैसे बने और सूचना नए विकास को किस प्रकार गति दे; जनता को जानने के अधिकार और जीवनयापन के अधिकारों में क्या सम्बंध है ; आदि, सवालों को अरुण पांडेय पेश करते है।

समाहार :

अब हम क्रमिक ढंग से एक किताब पर बात करना चाहेंगें ताकि हिन्दी पत्रकारिता के उस चेहरे को देखा जा सके जिसे इन किताबों के लेखक बनाते हैं। पहले इस चेहरे पर समस्याओं के चिन्हों को एकत्र करें। यह एक उपयोगी प्रयत्न होगा क्योंकि हमें हिन्दी पत्रकारिता के संकटों का परिचय तो मिलेगा ही संकटों को देखने की इन पत्रकारों की दृष्टि का भी परिचय मिल सकेगा और हम देख सकेंगें कि समस्याओं के निदान और उपचार के सूत्रों में भी समस्याएँ कहाँ पैदा हो रही है ?

निष्कर्ष : हम जिस सामाजिक परिवेश में रहते हैं उसका सीधा प्रभाव हमारे चिंतन, हमारे जीवन पर दिखलाई पड़ता है। हमारे रीति–रिवाज, परंपराएँ, जातिगत संस्कार सभी हमारे चिंतन को प्रभावित करते हैं। साहित्य में इधर पिछले दो दशको से यह माना जाने लगा है कि जो जिस वर्ग का है, वह व्यक्ति उस वर्ग के दुःख–दर्द,रीति–रिवाजों, परंपरा के जीवन को बेहतर ढंग से व्यक्त कर सकता है। दलित विमर्श, स्त्री विमर्श सभी इसी चिंतन के परिणाम है।

एक लेखक के रुप में जब हम विराट नहीं सोचेंगें हमारा चिंतन भी संकुचित होगा। किसी लेखक की पहली पहचान उसकी अपनी रचना होती है। उसके बाद लेखक का व्यक्तिव, जाति समाज सामने आता है। कोई जरुरी नहीं कि स्त्रियों के दुःख–दर्द को स्त्री ही भली–भांति लिख सकती है या किसान की कथा जानने के लिए किसान का बेटा ही होना जरुरी है।

इधर के दिनों में वैसे तो बहुत कुछ लिखा जा रहा है किन्तु उसमें समरसता, पठनीयता और लोक मंगल की कामना जैसी बातें कम ही दिखलाई पड़ती है। लेखक अपना भोगा हुआ यथार्थ लिखना चाहता है। यह भोगा हुआ यथार्थ कई बार उन हदों को भी पार कर देता है जो समाज ने तय कर रखा है। कई बार हमें जानबूझकर लिखा गया ऐसा लेखन देखने को मिलता है जिसके पीछे किसी विवाद को जन्म देना है। समाज में जो मूल्य, व्यक्ति, प्रतिभाएँ, मापदण्ड, चरित्र स्थापित है कई बार उनके लेखक खिलवाड़ करते है। इतिहास की आड़ लेकर या मिथकों के सारे ऐसा कुछ लिखा जाता है तो अपठनीय के साथ–साथ सामाजिक ताने–बाने को भी नुकसान पहुँचाता है।

नया लेखन समाज सापेक्ष लिखे इसके लिए जरुरी है कि उसे पढ़ने–लिखने, प्रशिक्षण आदि के भरपूर मौके स्कूल, कॉलेजो में गोष्ठियों के आयोजन कर लिखने–पढ़ने वालों को प्रोत्साहित किया जाए। लेखन शिविर आयोजित हो। किताबों का आदान–प्रदान तो समय–समय पर अलग–अलग विषयों पर चर्चा गोष्ठियाँ हो तब जाकर रचनाकार को लिखने के लिए एक नई दिशा और समाज सापेक्ष चिंतन प्राप्त होगा।

संदर्भ ग्रंथ

क्र	संदर्भ ग्रंथ	लेखक	प्रकाशन
1)	हिन्दी पत्रकारिता	डॉ0 कृष्ण बिहारी मिश्र	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
2)	पत्रकारिता सिद्धांत और स्वरुप	डॉ0 संजीव कुमार जैन	कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल
3)	पत्रकारिता का इतिहास एवं	डॉ0 संजीव भानावत	जनसंचार माध्यम
4)	हिन्दी पत्रकारिता सिद्धांत एवं	सविता चड्डा स्वरुप	
5)	पत्रकारिता के विविध आयाम	डॉ0 राजेन्द्र मिश्र	तक्षशिला प्रकाशन
6)	पत्रकारिता प्रशिक्षण	डॉ0 राजेन्द्र मिश्र	तक्षशिला प्रकाशन
7)	पत्रकार और पत्रकारिता	डॉ0 रमैंश जैन	कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
8)	मीडिया के पचास वर्ष	प्रेमचन्द पातंजलि	कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
9)	पत्रकारिता के छह दशक	जगदीश प्रसाद चर्तुवेदी	कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
10)	आधुनिक पत्रकारिता एक नजर	बेला रानी शर्मा	कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
11)	संचार एवं सामाजिक परिवर्तन	डॉ0 राकेश शर्मा	कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
12)	विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं से संदर्भ		